प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

(i) माँगन खबासक जन्म भेल छलनि

(क) 1908 मे (ख) 1918 मे

(ग) 1928 मे (घ) 1938 मे

(ii) माँगन खबास लोकप्रिय भेलाह

(क) संगीतमे (ख) नृत्यमे

(ग) चित्रकलामे (घ) बासुरी बादनमे

(iii) कोन प्रख्यात संगीतज्ञक ओ सबसे वेशी प्रिय छलाह

(क) पं० ओंकार नाथ ठाकुर (ख) करीम खाँ

(ग) नारायण राव (घ) व्यास।

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

2. दीर्घोत्तरीय प्रश्न –

(i) माँगन खबासक जीवनी संक्षेपमे लिखू।

(ii) माँगन खबासक संगीत-साधनाक वर्णन करू।

(iii) माँगन खबास कोन-कोन राजदरबारसँ सम्बन्ध रहलाह। उल्लेख करू।

(iv) कोन-कोन प्रसिद्ध संगीत सम्मेलनमे ओ भाग लेलनि आ सम्मानित भेलाह। वर्णन करू।

(v) माँगन खबास संगीत साधक छलाह। विवेचना करू।

गोदावरी दत्त

मिथिलाक महान चित्रकर्मी श्रीमती गोदावरीदत्तक जन्म 6 नवम्बर 1930 ई० मे दरभंगा जिलाक बहादुरपुर गाममे भेल छलनि। हुनक पिता रास बिहारी दासक छत्रछाया मात्र पाँच वर्ष धरि भेटलनि, मुदा माए श्रीमती सुभद्रादेवी अपन समयक चर्चित कला साधिका छलीह। पिता विहीन गोदावरीक शिक्षा प्राइवेटसँ मैट्रिक धरि छलनि। मिथिला लोकचित्रकलाक प्रेरणा माइये छलथिन, मुदा प्रोत्साहन भेटलनि उड़ीसावासी निदेशक हरिप्रसाद मिश्रसँ।

हिनक विवाह 1947 ई० मे राँटी (मधुबनी) क उपेन्द्रदत्तसँ भेलनि। हिनक वैवाहिक जीवन सुखमय नहि रहि सकल। एकटा पुत्र मात्र आधार छनि। अतः ओ सोहागिन रहितहुँ परित्यक्ता बनि गेलीह। ओ कहैत छलीह-हमर अभाग हुनक नहि दोष। ओ मिथिला लोकचित्रकलाक मुख्य पहचान बनि गेलीह।

मिथिला लोकचित्रकला पर मुख्यतः महिले लोकनिक एकाधिपत्य अछि। ओ एहि क्षेत्रक कलाविभूति पद्मश्री गंगादेवी, सीतादेवी, जगदम्बादेवी, ओ महासुन्दरीदेवीसँ विशेष प्रभावित छथि। एहि पारम्परिक लोकचित्रकलाक शिक्षण-प्रशिक्षणक कोनो औपचारीक व्यवस्था नहि छैक। एहिठामक स्त्री लोकनिकेँ चित्रकलाक ज्ञान पारिवारिक अथवा कौटुम्विक परिवेशेसँ भेटैत छनि। मुदा गोदावरीदत्त प्रतिवर्ष दसटा शिष्याकेँ प्रशिक्षण दैत आबि रहल छथि। हिनक छोट बहिन शशिकला एकटा चर्चित चित्रकर्मी बनि गेल छथि, जे हुनक शिष्या सेहो छलथिन।

गोदावरीदत्तकेँ मिथिला लोकचित्रकलामे उल्लेखनीय योगदानक हेतु सर्वप्रथम 1973 ई० मे राज्य सम्मान ओ राष्ट्रपतिक हाथे श्रेष्ठ ओ दक्ष शिल्पीक पुरस्कार 14 नवम्बर 1980 केँ देल गेल छलनि। पश्चात् हिनक कला साधनामे निरन्तर विकासकेँ देखैत 1975 ई० मे चेतना समिति पटना द्वारा ताम्रपत्र, 1977 मे

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

टी० ए० पाई द्वारा प्रशस्तिपत्र, 1980 मे प्रख्यात चित्रकार उपेन्द्र महारथी एवं 1983 मे मधुबनीक जिलाधीश द्वारा प्रशंसापत्र सेहो देल गेलनि। आ 1980 सँ ब्रह्मानंद कला महाविद्यालय, दरभंगामे व्याख्याता पद पर काज करैत रहलीह। एहि तरहेँ मिथिला लोकचित्रकलाकेँ ओ नव दिशा ओ दृष्टि देवामे समर्थ भेलीह।

ओ देश-विदेशमे लोकचित्रकला विषयक शिक्षण-प्रशिक्षणक काज सेहो कयलनि। 1985 मे तीन स ाहक लेल जर्मनीमे कला प्रदर्शन कयने छलीह। सभटा भारत सरकार द्वारा प्रतिनियोजित छल। गोदावरीदत्तकेँ मैथिली, हिन्दी एवं अंग्रेजीक ज्ञान छलनि, जाहिसँ देश-विदेश भ्रमण एवं शिक्षण-प्रशिक्षणमे कोनो विशेष कष्ट नहि भेलनि।

हिनक एकटा प्रसिद्ध लोकचित्र जापानमे संरक्षित अछि। नौ गुणे साढ़े तीन ईंचक एहि विशेष चित्रमे विवाहक समस्त विधि प्रकारक चित्रांकन कयल गेल अछि। एहि चित्रक लेल हुनका सात हजार टाका देल गेलनि। एहिसँ प्रभावित पद्मश्री गंगादेवीक चित्र 'जीवन चक्र' अछि, जाहिमे जन्मसँ मृत्यु धरिक चौबीसटा दृश्यकेँ रूपांकित कयल गेल अछि। हिनक चित्र सभक प्रदर्शनी कोलकाता, दिल्ली, मुम्बई, त्रिवेन्द्रम् आदि बाहर सभमे भेल छल एवं ओ बेस प्रशंसित भेलीह।

बिहारक इण्डियन नेशन, आर्यावर्त, मिथिला मिहिर, आज आदि एवं स्टेटसमैन, पेट्रीओट, पोर्टफोलिया, ग्रेट ब्रिटेन आदिमे हिनक सचित्र जीवनयात्रा एवं कलायात्राक विवरण प्रकाशित अछि। एहितरहेँ गोदावरीदत्त अन्तर्राष्ट्रीय स्तरक कलाक एकान्त साधिका छथि, हिनकासँ मिथिलाक गौरव ओ गरिमा बढ़ल अछि।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

(i) गोदावरी दत्तक जन्म भेल छलनि

(क) 1930 ई०मे (ख) 1940 ई०मे

(ग) 1950 ई०मे (घ) 1960 ई०मे

(ii) गोदावरी दत्तक उल्लेखनीय योगदान अछि –

(क) लोकचित्र कलामे (ख) संगीतमे

(ग) नाट्यमे (घ) नृत्यमे

(iii) राष्ट्रपति द्वारा श्रेष्ठ ओ दक्ष शिल्पीक पुरस्कार गोदावरी दत्तकेँ कहिया देल गेलनि

(क) 1980 मे (ख) 1970 मे

(ग) 1975 मे (घ) 1990 मे

2. दीर्घोत्तरीय प्रश्न –

(i) गोदावरी दत्तक जीवनी संक्षेपमे लिखू।

(ii) पठित पाठक आधार पर गोदावरी दत्तक मिथिला लोकचित्रकलामे उल्लेखनीय योगदानक वर्णन करू।

(iii) गोदावरी दत्तकेँ देल गेल पुरस्कार ओ सम्मानक उल्लेख करू।

(iv) देश विदेशमे गोदावरी दत्तक लोकचित्र कला विषयक शिक्षण-प्रशिक्षण काजक वर्णन करू।

(v) गोदावरी दत्त मिथिला लोककलाकेँ नव दिशा ओ दृष्टि देलनि। विवेचना करू।